# मानव एकता गीत

तर्ज़: गम उठाने के लिए मैं तो जिये जाऊँगा .....

**शेर:** वीर प्रताप तूने दी है ऐसी क़ुरबानी, दोनो जहान तेरे कर्ज़दार, कहलाये,
अपने ही खून से सींचा है गुलसिताँ ऐसा, हर एक फूल जिसका सेवादार कहलाये

वीर परम पद सतगुरू संग पाई तूने
आखरी साँस तक ये प्रीत निभाई तूने
वीर परम पद सतगुरू संग पाई तूने .....

सेवा करके दी तूने अपनी ये क़ुरबानी है
धन्य प्रताप तेरी अमर ये कहानी है
तुम्हे तो मिल गया है अपनी सेवा का फल
ऐसा जीवन तुझसे माँगे अपनी सेवादल
वीर परम पद सतगुरू संग पाई तूने .....

अपनी भक्ति से तूने सतगुरु रिझाया था
कभी डोला नहीं विश्वास ऐसा पाया था
गुरुवचनों से तूने ज़िंदगी सवांरी थी
सारी दुनिया से भीसंगत गुरु की प्यारी थी
वीर परम पद सतगुरू संग पाई तूने .....

तेरी करनी ने इतिहास ये बनाया है
तेरे जीवन ने नया रास्ता दिखाया है
'गोपी' 'दिलवर' माँगे 'भगवन' जीवन ऐसा
बीते गुरु चरणों में हर स्वास ये तेरे जैसा
वीर परम पद सतगुरू संग पाई तूने .....